IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 5, December 2025
Impact Factor: 7.67

çepn d: lkfgR; e: lkekftd ;FkkFk vkj ekuoh; eY;

शकीला देवी

रिसर्च स्कॉलर, हिन्दी विभाग

डॉ. संदीप कुमार

सह - प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

एन आई आई एल एम विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा

lkjk'k

प्रेमचंद हिंदी साहित्य के ऐसे युगप्रवर्तक लेखक हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज के यथार्थ जीवन को अत्यंत सशक्त और संवेदनशील रूप में प्रस्तुत किया है। उनका साहित्य तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक और नैतिक परिस्थितियों का जीवंत दस्तावेज है। प्रेमचंद के उपन्यास और कहानियाँ सामाजिक विषमता, गरीबी, किसान शोषण, नारी उत्पीड़न तथा वर्ग संघर्ष जैसी ज्वलंत समस्याओं को यथार्थवादी दृष्टिकोण से उजागर करती हैं। उन्होंने समाज के शोषित और उपेक्षित वर्ग को अपने साहित्य का केंद्र बनाया तथा उनकी पीड़ा, संघर्ष और आकांक्षाओं को मानवीय संवेदना के साथ अभिव्यक्त किया।

प्रेमचंद के साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सामाजिक यथार्थ के चित्रण के साथ–साथ उसमें करुणा, प्रेम, नैतिकता, समानता, त्याग और मानवता जैसे मूल्यों की गहरी छाप मिलती है। उनके पात्र विषम परिस्थितियों में भी मानवीय मूल्यों को बनाए रखते हुए संघर्ष करते हैं, जिससे पाठक के मन में सहानुभूति और सामाजिक चेतना का विकास होता है। यह शोध–पत्र प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक यथार्थ और मानवीय मूल्यों के आपसी अंतर्संबंध का विश्लेषण करता है। अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। शोध के निष्कर्ष यह स्पष्ट करते हैं कि प्रेमचंद का साहित्य केवल समाज का दर्पण नहीं है, बल्कि वह समाज–सुधार और मानवीय मूल्यों की स्थापना का एक सशक्त माध्यम भी है।

çe[k 'kCn % *çepn] lkekftd ;FkkFk] ekuoh; eY;] ;FkkFkokn] fdlku thou] ufrdrkA*